

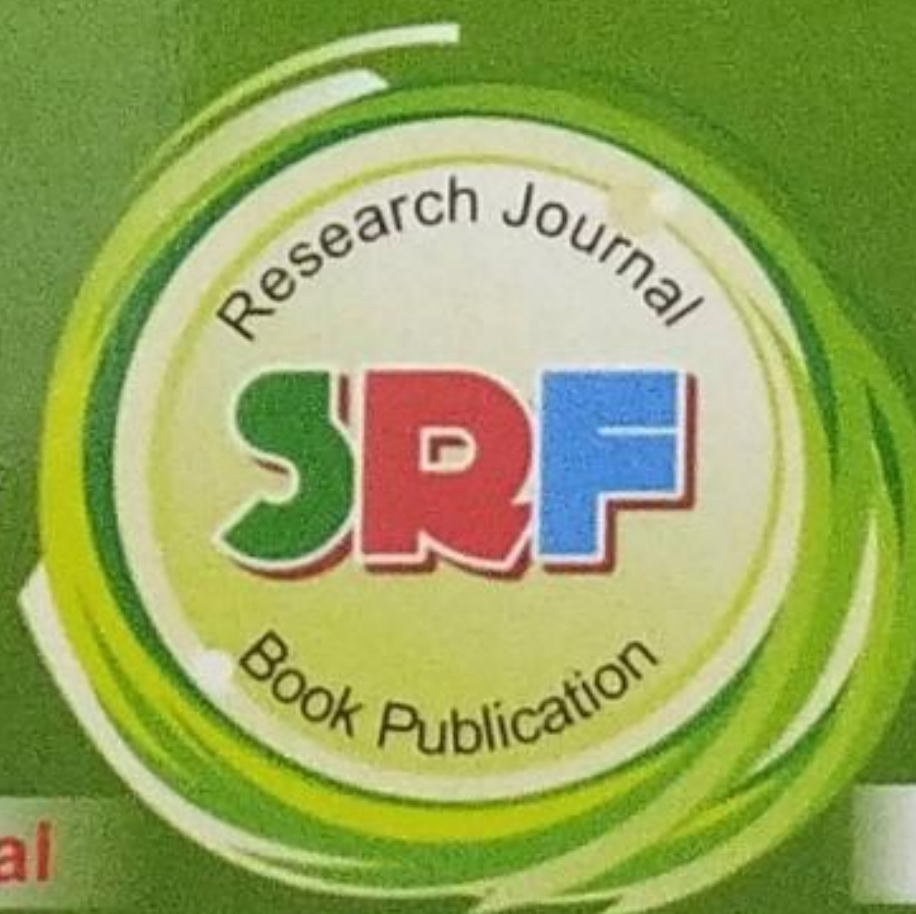
Peer Reviewed Journal for M. Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2394-3580

VOLUME - 6 No. : 5 March - 2019

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH



Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 4.2

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

16	ग्रामीण वित्तीय सशक्तिकरण में नाबार्ड की भूमिका	डॉ. देवेन्द्र जैन	61-65
17	स्लेट पेशिल उद्योग का आर्थिक विश्लेषण-एक भौगोलिक अध्ययन	डॉ. शांतिलाल ईरवार	66-73
18	शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि, दाले विद्यार्थियों की व्यवसायिक रुचि का अध्ययन	श्रीमती अंजली अवरथी	74-76
19	किशोर विद्यार्थियों को अनुशासनात्मक व्यवहार पर संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म विश्वास के प्रभाव का अध्ययन	डॉ. श्रीमती बबीता बर्मा श्रीमती अंजली अवरथी	77-79
20	मध्यप्रदेश के औद्योगिक विकास में वित्तीय संस्थाओं के योगदान का अध्ययन	डॉ. शैलेन्द्र कुमार बसेड़िया	80-86
21	ईस्ट इण्डिया कालीन आर्थिक व्यवस्था	डॉ. राजेश सकवार	87-89
22	ग्रामीण भारत में खाद्यान्न सुरक्षा के क्षेत्र में लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली की भूमिका	जितेश पोरवाल	90-95
23	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	पायल लिल्हारे	96-98
24	अनिद्रा रोग Insomnia की संगीत चिकित्सा	संजय दुबे	99-100
25	डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर का बौद्ध धर्म के प्रति दृष्टिकोण	निर्मल कीर्ति गेडाम	101-105
26	भ्रष्टाचार - कारण व निवारण "वर्तमान में भ्रष्टाचार सर्वत्र और सर्वशक्तिमान हो गया है, मानो भावना की जगह ले रहा हो"	डॉ. सुनिता श्रीवास्तव	106-107
27	वर्तमान समय में महिला साक्षरता का प्रभाव जनजातीय समाज पर	डॉ. प्रीतिबाला मिश्रा माधवीलता	108-111
28	नैतिक मूल्यों की महत्ता	ज्ञान्ती यादव	112-114
29	होलकर रियासत की स्थापना और उसके क्षेत्र का इतिहास	डॉ. बी.एल. चौहान सोनल सिंह वास्केल	115-117
30	सोलह कलाओं के अवतार श्री राधा के कृष्ण	अंजली कनौजिया	118-123
31	पुलिस विज्ञान वर्तमान परिप्रेक्ष्य में	डॉ. श्रीमती उषा तिवारी रेखा चन्द्रपाल	124-125
32	रोजगार के अवसर : मनरेगा के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. रविदास अहिरवार	126-130
33	बुन्देलखण्ड अंचल के प्रमुख ग्रामीण देवता : हरदौल के विशेष संदर्भ में	डॉ. संजय बरोलिया	131-133
34	निष्पक्ष चुनाव निष्पादन में चुनाव आयोग की भूमिका	अभिजीत सिंह	134-135
35	रानी अवन्ति बाई स्वतंत्रता संग्राम (1857) में एवं मण्डला के आदिवासी	मनोज कुमार कुशवाहा	136-138

बुन्देलखण्ड अंचल के प्रमुख ग्रामीण देवता : हरदौल के विशेष संदर्भ में

डॉ. संजय बसोनिया

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भारतवर्ष में सर्वत्र विविधता व्याप्त है। यह विविधता आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक क्षेत्रों में अधिक सहस्रस की जाती है। आज विज्ञान ने महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त कर ली हैं। परन्तु इसके बावजूद उसके समक्ष यह प्रश्न द्वावत है कि कोई इक्षित है, जो इस प्रकृति का संचालन कर रही है। धार्मिक क्षेत्र में विभिन्न अंचलों में अत्यंत विविधताएँ पाई जाती हैं। किसी विशेष क्षेत्र में किसी विशेष देवी या देवता की अराधना की जाती है। असुखा की भावना तथा आपदाओं से मुक्ति प्राप्त करने हेतु देवी-देवताओं की उपासना प्राचीन काल से ही होती रही है। इन देवताओं का गुणगान समय विशेष पर भक्ति के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। इसी कारण इनके अनेक रूप देखने मिलते हैं, परन्तु सभी की अराधना का उद्देश्य जन-कल्याण है।

भारत की अधिसंख्यक आबादी ग्रामों में बसती है, अतः भारतीय संस्कृति का दर्शन ग्रामों से ही प्राप्त होता है। बुन्देलखण्ड अंचल में ग्रामीण देवी-देवताओं की भरमार है। इन देवताओं में कोई आपदा या घटना विशेष से, कोई स्वास्थ्य से और कोई व्यवसाय से संबंधित है।¹ इनमें से कई एक हिन्दू धर्म के हैं और कई अनार्य प्रथा के हैं। इसके अतिरिक्त किसी क्षेत्र विशेष में कोई व्यक्ति अपने उज्ज्वल चरित्र, त्याग, जनसेवा और बलिदान के कारण देवता की तरह पूजा जाता है, तो वह भी ग्रामीण लोक देवताओं में गिना जाता है।²

बुन्देलखण्ड में खेरमाता, हरदौल, दूल्हादेव, मिड़ोहिया, घटोइया, गौड़ बाबा, ठाकुर बाबा आदि देवी-देवताओं की ग्रामीणों द्वारा पूजा-अर्चना की जाती है। ये सभी देवता सदियों से लोक विश्वास और श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु बने हुये हैं, जहाँ लोग भक्ति भाव से उपासना करते हैं। यहाँ मनौतियाँ मानने का भी चलन है।

खेरमाता को देवी का अवतार माना जाता है तथा नवरात्रि तथा आपदा आने पर इनकी विशेष पूजा

की जाती है।³ दूल्हादेव की विवाह के समय पूजा की जाती है। बारात जाने के पूर्व और आने के पश्चात् इनकी पूजा आवश्यक मानी जाती है। कहा जाता है कि विवाह के समय कोई दूल्हा मर गया था इसलिए इस अशुभ को टालने के लिए इनकी पूजा की जाती है।⁴ नाले के घाट पर रहने वाला देवता घटोइया कहलाता है। ससुराल जाते समय स्त्री इसे पूजती है, नहीं तो बीमार हो जाने का भय होता है। यहाँ से निकलने वाली गर्भिणी स्त्री इसे वंदना करती है, नहीं तो गर्भपात की आशंका रहती है।⁵

खेत की मेड़ का देवता मिड़ोहिया कहलाता है। खेत बोन और काटने से पहले सारे किसान दही, चावल और नारियल मेड़ पर चढ़ाकर इसकी पूजा करते हैं तथा फसल अच्छी होने की अभिलाषा करते हैं।⁶ किसी गौड़ की मृत्यु पर उसका उद्धार गौड़ बाबा द्वारा किया जाता है।⁷

बुन्देलखण्ड के अतिरिक्त अन्य किसी प्रदेश में नर को उसके महान कार्यों के आधार पर देव नहीं बनाया गया है। अपनी आन पर मर मिटने की निराली प्रतिज्ञा यहाँ अनूठी है। इसका अप्रतिम उदाहरण हरदौल हैं, जिन्हें बुन्देलखण्ड के अंचल में सर्वत्र पूजा जाता है। बुन्देलखण्ड में 'हरदौल' लाला के नाम से ही प्रसिद्ध हैं। हरदौल का जन्म संवत् 1665 (सन् 1608) में हुआ था।⁸ हरदौल ओरछा के राजा जुझारसिंह बुन्देला के छोटे भाई थे तथा वे राजा की अनुपस्थिति में राज-काज देखते थे। हरदौल ने मुगल बादशाह जहाँगीर की रक्षा उनके ही सेनापति महावत खान से की थी, जिससे मुगल सम्राट जहाँगीर उनकी वीरता देखकर अति प्रसन्न हुआ। उन्होंने बुन्देलखण्ड के आसपास के क्षेत्रों की रक्षा मुगल सेना से कई बार की थी।⁹

प्रत्येक गाँव में हरदौल की मिट्टी की मूर्ति मिट्टी के घोड़े पर होती है, उसके हाथ में भाला रहता है, उनका मंदिर या चबूतरा गाँव के बाहर होता है और उस पर झंडा लगा रहता है।¹⁰ यदि मूर्ति न लग सके